साहित्योत्सव 2021 : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने दिया संवत्सर व्याख्यान

साहित्य अकादेमी का तीन दिवसीय साहित्योत्सव

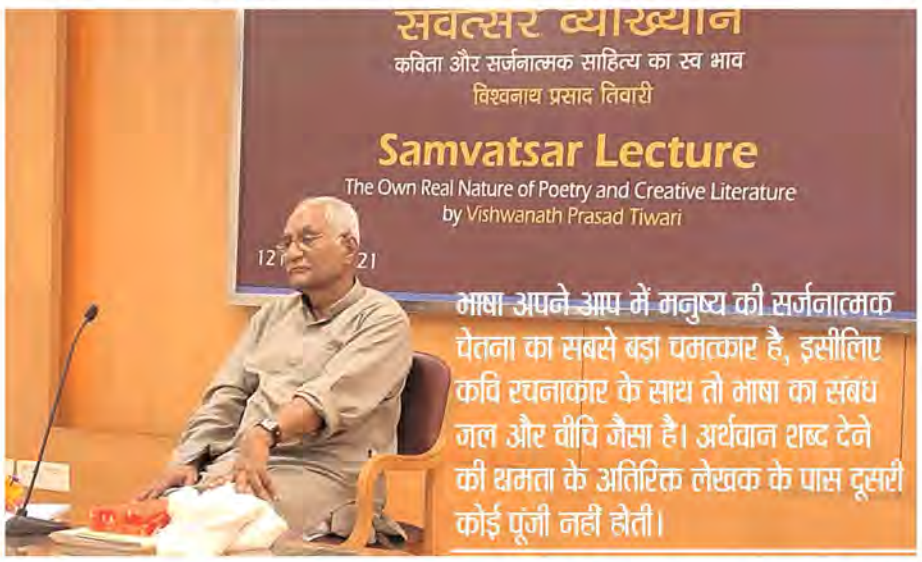

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले 'साहित्योत्सव 2021' का शुभारंभ अकादेमी की वर्षभर की गतिविधियों को प्रदर्शित करने वाली अकादेमी प्रदर्शनी 2020 से हुआ, जिसका उद्घाटन साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने किया। प्रदर्शनी के उद्घाटन से पूर्व साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने पिछले वर्ष साहित्य अकादेमी द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी के कारण आई रुकावटों के बावजूद अकादेमी द्वारा पिछले वर्ष 540 वर्चुअल कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिन्हें यूट्यूब पर लगभग दो लाख, फेसबुक पर सात लाख दस हजार एवं ट्वीटर पर सत्रह लाख साहित्य प्रेमियों ने देखा। इस बीच 235 पुस्तकों का भी प्रकाशन किया गया। प्रदर्शनी में साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित दस भारतीय कालजयी कृतियों के रूसी एवं चीनी अनुवाद, नेताजी सुभाष चंद्र बोस के पत्रों का अंग्रेज़ी, हिंदी एवं बाङ्ला में प्रकाशन तथा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' योजना के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों और आयोजित कार्यक्रमों की सूचनाओं को भी प्रदर्शित किया गया है। इसके अतिरिक्त अंतराष्ट्रीय कविता दिवस, अंतरराष्ट्रीय स्वदेशी भाषा दिवस, महात्मा गांधी के 150वें जयंती वर्ष पर अकादेमी द्वारा आयोजित विशेष कार्यक्रमों की जानकारी भी प्रदर्शित की गई है। प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक, साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य लेखक एवं विद्वान भी उपस्थित रहे।

सायं 6.00 बजे प्रख्यात हिंदी कवि, आलोचक, साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान में महत्तर सदस्य विश्वनाथ प्रसाद ने प्रतिष्ठित संवत्सर व्याख्यान प्रस्तुत किया। 'कविता और सर्जनात्मक साहित्य का स्व भाव' शीर्षक से दिए गए अपने व्याख्यान में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि भाषा अपने आप में मनुष्य की सर्जनात्मक चेतना का सबसे बड़ा चमत्कार है, इसीलिए कवि रचनाकार के साथ तो भाषा का संबंध जल और वीचि जैसा है। अर्थवान शब्द देने की क्षमता के अतिरिक्त लेखक के पास दूसरी कोई पूँजी नहीं होती। आगे उन्होंने कहा कि 'देखने' और 'कहने' के अनोखे अंदाज़ में ही कवि और रचनाकार की सर्जनात्मकता सिद्ध होती है। कवि जब देखता है तो सामान्य को भी विशिष्ट बना देता है। फ़िराक़ गोरखपुरी कहते थे कि लोग बड़ी-बड़ी चीज़ें देख लेते हैं पर यह नहीं देख पाते कि उनके पैरों के नीचे की घास कैसे सिर उठाती है। कबीर अपने एक पद में कहते हैं, 'चींटी के पग रुनझुन बाजे, सो भी साईं सुनता है।' कवि भी ईश्वर की ही तरह सब कुछ सुनता और देखता है।

> *'देखने' और 'कहने' के अनोखे अंदाज़ में ही कवि और रचनाकार की सर्जनात्मकता सिद्ध होती है। कवि जब देखता है तो सामान्य को भी विशिष्ट बना देता है। फ़िराक़ गोरखपुरी कहते थे कि लोग बड़ी-बड़ी चीज़ें देख लेते हैं पर यह नहीं देख पाते कि उनके पैरों के नीचे की घास कैसे सिर उठाती है। कबीर अपने एक पद में कहते हैं, 'चींटी के पग रुनझुन बाजे, सो भी साईं सुनता है।' कवि भी ईश्वर की ही तरह सब कुछ सुनता और देखता है।*

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने विस्तृत व्याख्यान के दौरान कई पश्चिमी एवं भारतीय लेखकों एवं आलोचकों के सूत्र वाक्यों का उल्लेख करते हुए अपनी बात रखी। व्याख्यान की समाप्ति के बाद इसकी पुस्तकाकार प्रति का लोकार्पण अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा किया गया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक भी उपस्थित थे। व्याख्यान के आरंभ में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने उनका स्वागत शॉल और पुस्तकें भेंट करके किया और कहा कि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी केवल हिंदी ही नहीं बल्कि आधुनिक भारतीय भाषाओं के बड़े कवि हैं। मैंने उनके अध्यक्षीय कार्यकाल में पाँच वर्ष उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए उनकी बहुमुखी प्रतिभा को बहुत अच्छे से जाना समझा है। इससे पहले पूर्व साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सवंत्सर व्याख्यान के बारे में बताते हुए कहा कि यह अकादेमी की प्रतिष्ठित व्याख्यान शृंखला की पैंतीसवीं कड़ी है। इस व्याख्यान को देश के प्रमुख विद्वान प्रस्तुत करते रहे हैं, जिनमें कुछ प्रमुख नाम हैं - अज्ञेय, निर्मल वर्मा, विजय तेंदुलकर, गिरीश कर्नाड, विंदा करंदिकर, गोपीचंद नारंग, रामचंद्र गुहा एवं प्रणव मुखर्जी आदि।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह का आयोजन

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे 'साहित्योत्सव 2021' के दूसरे दिन का मुख्य आकर्षण साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह था, जो कमानी सभागार में प्रख्यात हिंदी कथा लेखिका चित्रा मुद्गल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि अनुवादक एक सीमा तक स्वयं लेखक होता है। अच्छे अनुवादक के लिए परकाया प्रवेश का हुनर होना बहुत ज़रूरी है। साहित्य का अनुवाद अतिरिक्त सतर्कता की माँग करता है और इसके लिए मनोवैज्ञानिक विवेक की भी आवश्यकता है क्योंकि इसके होने पर ही कोई अनुवादक रचना के मर्म तक पहुँच सकता है। सभी पुरस्कृत अनुवादकों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि आने वाले समय में अनुवादकों की विशेष भूमिका रहेगी।

इससे पहले साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि हमारी बहुआयामी संस्कृति की एकता का आधार अनुवाद ही है। पूरे भारतीय महाद्वीप में जो सांस्कृतिक एकता हम देखते हैं वह विभिन्न भाषाओं और उनसे हुए अनुवादों के चलते ही है। हमारी कई प्राचीन पौराणिक कथाओं ने अनुवाद के ज़रिए ही एक पहचान पाई है। आज साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 प्राप्त करने वाले अनुवादक थे - नव कुमार सन्दिकै (असमिया), तपन बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), रत्न लाल बसोत्रा (डोगरी), सुसन डैनियल (अंग्रेज़ी), आलोक गुप्त (हिंदी), विट्ठलराव टी. गायकवाड (कन्नड), रत्न लाल जौहर (कश्मीरी), जयंती नायक (कोंकणी), केदार कानन (मैथिली), सई परांजपे (मराठी), सचेन राई 'दुमी' (नेपाली), अजय कुमार पटनायक (ओड़िआ), देव कोठारी (राजस्थानी), प्रेमशङ्कर शर्मा (संस्कृत), खेरवाल सोरेन (संताली), ढोलन राही (सिंधी), के.वी. जयश्री (तमिळ), पी. सत्यवती (तेलुगु) एवं असलम मिर्ज़ा (उर्दू)। पुरस्कृत अनुवादकों को पुरस्कार के रूप में 50000/- रुपये की राशि और उत्कीर्ण ताम्र फलक साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान किए गए।

गोपीनाथ ब्रह्म (बोडो), बकुला घासवाला (गुजराती), सी.जी. राजगोपाल (मलयाळम्), खुमांथेम प्रकाश सिंह (मणिपुरी) एवं प्रेम प्रकाश (पंजाबी) अपरिहार्य कारणों से पुरस्कार ग्रहण करने नहीं आ सके।

कार्यक्रम के अंत में, समापन वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि अनुवादक साहित्य के सबसे बड़े मिशनरी हैं। वे लेखकों द्वारा रचे मौन को भी पढ़कर उसको सार्थक अभिव्यक्ति देते हैं। समारोह के आरंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए अनुवाद की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अनुवाद ही ज्ञान की कुंजी है। साहित्योत्सव के तीसरे दिन आज प्रातः 10.30 बजे से अनुवादक सम्मिलन का आयोजन साहित्य अकादेमी सभागार, रवीन्द्र भवन में होगा, जिसमें पुरस्कृत अनुवादक अपने रचनात्मक अनुभव साझा करेंगे।

समारोह आज

अनामिका को हिंदी का साहित्य अकादमी पुरस्कार

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

नई दिल्ली. हिंदी कविता संग्रह के लिए अनामिका व कन्नड़ में महाकाव्य के लिए कांग्रेस नेता वीरप्पा मोइली को वर्ष 2020 का साहित्य अकादमी पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। **अनामिका@पेज08**

अनामिका को ...

मुजफ्फरपुर (बिहार) की अनामिका को यह सम्मान हिंदी कविता संग्रह 'टोकरी में दिगंत : थेरीगाथा' के लिए दिया गया है। हिंदी में कविता संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार पाने वाली वह देश की पहली महिला साहित्यकार हैं। वह दिल्ली विश्वविद्यालय के एक कॉलेज में अंग्रेजी की प्राध्यापिका हैं।

साहित्य अकादमी की स्थापना दिवस पर शुक्रवार से दो दिवसीय साहित्योत्सव का शुभारंभ हुआ। शनिवार को भारतीय भाषाओं के साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार 2019 दिए जाएंगे। इस समारोह में मुख्य अतिथि प्रख्यात हिंदी कथाकार चित्रा मुद्गल होंगी।

18 भाषाओं में पुरस्कारों की घोषणा

कविता विधा में द्विजेन दास (असमिया), न्यूटन के. बसुमतारी (बोडो), गंगा शर्मा (डोगरी), मसरूर मुज़फ्फर (कश्मीरी), रामेश्वर शरंगबम (मणिपुरी), दीपक धालेवान (पंजाबी), अंजलि (संथाली), ऋषिराज पाठक (संस्कृत), शक्ति (तमिल), साकल्य फरीदी (उर्दू) और कहानी विधा में के.एस. महादेवस्वामी (कन्नड़), सोनू कुमार झा (मैथिली), मानसा येन्दलुरी (तेलुगु) को चुना गया। निबंध विधा में अंजन बासकोटा (नेपाली) और चन्द्रशेखर होता (उड़िया), संस्मरण के लिए यशिका दत्त (अंग्रेजी), आलोचना के लिए अनिल नरवाल (हिंदी) के नामों की घोषणा की गई। वहीं, मराठी के लिए लेखक नंद खरे ने साहित्य अकादमी पुरस्कार से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि मैंने केवल इसलिए मना किया क्योंकि समाज मुझे बहुत दे चुका है। कोई राजनीतिक या अन्य कारण नहीं है।

साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार, 2019 के विजेताओं को कमानी सभागार में किया गया सम्मानित

संस्कृतियों को जोड़ते हैं अनुवादक: चित्रा मुद्गल

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: 'अनुवादक दो भाषाओं, दो राज्यों, दो देशों और दो संस्कृतियों के बीच सेतु की तरह होते हैं। इनका जितना सम्मान किया जाए उतना कम है।' प्रख्यात हिंदी लेखिका चित्रा मुद्गल ने यह बात कमानी सभागार में साहित्य अकादमी की तरफ से आयोजित साहित्योसव के तहत अनुवाद पुरस्कार, 2019 के विजेताओं के सम्मान समारोह के दौरान कही।

उन्होंने कहा कि हर अनुवादक की यह कोशिश रहती है कि भाषा व देश की सीमाओं से आगे बढ़कर दो अलग-अलग परंपराओं वाली संस्कृतियों को परस्पर जोड़ा जाए। इस तरह का कठिन काम करने वाले सभी अनुवादक बधाई के पात्र हैं। अनुवादक अपनी प्रतिभा के जरिये विकासशील समाज को प्रोत्साहित कर रहे हैं, जो युवा अनुवादक के तौर पर करियर बनाना चाहते हैं, उन्हें यह जान लेना चाहिए कि अच्छा अनुवादक बनने के लिए परकाया प्रवेश का हुनर होना बहुत जरूरी है। साहित्य का अनुवाद अतिरिक्त सतर्कता की मांग करता है और इसके लिए मनोवैज्ञानिक विवेक की भी जरूरत होती है, क्योंकि इसके होने पर ही कोई अनुवादक रचना के मर्म तक पहुंच पाता है।

वहीं, इस दौरान अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा 'हमारी बहुआयामी संस्कृति की एकता का आधार अनुवाद ही है। पूरे भारतीय महाद्वीप में जो सांस्कृतिक एकता हम देखते हैं वह विभिन्न भाषाओं और उनसे हुए अनुवादों के चलते ही है। हमारी कई प्राचीन पौराणिक कथाओं ने अनुवाद के जरिये ही पहचान पाई है।' वहीं, अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि अनुवादक साहित्य के सबसे बड़े योद्धा हैं। वे लेखकों के मौन को भी पढ़कर उसको सार्थक अभिव्यक्ति देते हैं।

आलोक गुप्त (दाएं) को सम्मानित करते चंद्रशेखर कंबार ● संजय

पुरस्कार लेते प्रेमशंकर शर्मा ● जागरण

अंग्रेजी के लिए पुरस्कार लेते हुए सुसन डैनियल ● जागरण

मैथिली के लिए सम्मान लेते केदार कानन ● जागरण

हिंदी के लिए आलोक गुप्त व संस्कृत के लिए प्रेमशंकर शर्मा को किया गया सम्मानित

अकादमी की तरफ से घोषित अनुवाद पुरस्कार 2019 से आलोक गुप्त (हिंदी), देव कोठारी (राजस्थानी), प्रेमशंकर शर्मा (संस्कृत), असलम मिर्जा (उर्दू), रत्न लाल बसोत्रा (डोगरी), केदार कानन (मैथिली), सचेन राई (नेपाली), नव कुमार संदिकै (असमिया), तपन बंद्योपाध्याय (बांग्ला), सुसन डैनियल (अंग्रेजी), रत्न लाल जौहर (कश्मीरी), बकुला घासवाला (गुजराती), प्रेम प्रकाश (पंजाबी), सई परांजपे (मराठी), विट्ठलराव टी. गायकवाड (कन्नड), जयंती नायक (कोंकणी), अजय कुमार पटनायक (ओड़िया), खेरवाल सोरेन (संताली), ढोलन राही (सिंधी), केवी जयश्री (तमिल) व पी. सत्यवती (तेलुगु) को सम्मानित किया गया। विजेताओं को 50 हजार रुपये की राशि के चेक के साथ स्मृति चिह्न दिए गए।

NAVODAYA TIMES
नवोदय टाइम्स

19 भाषाओं के अनुवादकों को दिए साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार

हिंदी में आलोक गुप्त तो उर्दू में असलम को पुरस्कार से नवाजा गया

अनुवादक स्वयं एक सीमा तक लेखक होता है : चित्रा मुद्‌गल

नई दिल्ली, 13 मार्च (नवोदय टाइम्स): साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित किए जा रहे 'साहित्योत्सव 2021' के दूसरे दिन शनिवार को कमानी सभागार में साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह में 19 भाषाओं में अनुवाद करने वाले अनुवादकों को पुरस्कार अर्पित किए गए। समारोह मुख्य अतिथि हिंदी कथा लेखिका चित्रा मुद्‌गल ने कहा कि अनुवादक एक सीमा तक स्वयं लेखक होता है। अच्छे अनुवादक के लिए परकाया प्रवेश का हुनर होना बहुत जरूरी है। साहित्य का अनुवाद अतिरिक्त सतर्कता की मांग करता है और इसके लिए मनोवैज्ञानिक विवेक की भी आवश्यकता है क्योंकि इसके होने पर ही कोई अनुवादक रचना के मर्म तक पहुंच सकता है। सभी पुरस्कृत अनुवादकों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि आने वाले समय में अनुवादकों की विशेष भूमिका रहेगी। साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि हमारी बहुआयामी संस्कृति की एकता का आधार अनुवाद ही है। पूरे भारतीय महाद्वीप में जो सांस्कृतिक एकता हम देखते हैं, वह विभिन्न भाषाओं और उनसे हुए अनुवादों के चलते ही है। हमारी कई प्राचीन पौराणिक कथाओं ने अनुवाद के जरिए ही एक पहचान पाई है।

कमानी सभागार में 19 भाषाओं में अनुवाद करने वाले अनुवादकों को पुरस्कार अर्पित किए गए।

अनुवादक साहित्य की सबसे बड़ी मिशनरी हैं: माधव कौशिक

शनिवार को साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार 2019 प्राप्त करने वाले अनुवादकों में नव कुमार सन्दिकै (असमिया), तपन बंद्योपाध्याय (बांग्ला), रत्न लाल बसोत्रा (डोगरी), सुसन डैनियल (अंग्रेजी), आलोक गुप्त (हिंदी), विट्ठलराव टी. गायकवाड (कन्नड़), रत्न लाल जौहर (कश्मीरी), जयंती नायक (कोंकणी), केदार कानन (मैथिली), सई परांजपे (मराठी), सचेन राई 'दुमी' (नेपाली), अजय कुमार पटनायक (ओड़िआ), देव कोठारी (राजस्थानी), प्रेमशंकर शर्मा (संस्कृत), खेरवाल सोरेन (संताली), ढोलन राही (सिंधी), के.वी. जयश्री (तमिल), पी. सत्यवती (तेलुगु) एवं असलम मिर्जा (उर्दू)। पुरस्कृत अनुवादकों को पुरस्कार के रूप में 50000/- रुपए की राशि और उत्कीर्ण ताम्र फलक साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान किए गए। बता दें कि गोपीनाथ ब्रह्म (बोडो), बकुला घासवाला (गुजराती), सी.जी. राजगोपाल (मलयालम), खुमांथेम प्रकाश सिंह (मणिपुरी) एवं प्रेम प्रकाश (पंजाबी) अपरिहार्य कारणों से पुरस्कार ग्रहण करने नहीं आ सके। कार्यक्रम के अंत में, समापन वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि अनुवादक साहित्य के सबसे बड़े मिशनरी हैं। वे लेखकों द्वारा रचे मौन को भी पढ़कर उसको सार्थक अभिव्यक्ति देते हैं।

Atulya Bharat News
Nirbheek, Nidar, Nirnayak
13 March 2021, Saturday

साहित्य अकादेमी के तीन दिवसीय साहित्योत्सव की शुभारंभ, चंद्रशेखर कंबार ने किया प्रदर्शनी का उद्घाटन, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने दिया संवत्सर व्याख्यान

ALL

Bhavna Sharma March 13, 2021 Read Time: 3 Minute, 47 Second

Share

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले 'साहित्योत्सव 2021' का शुभारंभ शुक्रवार को अकादेमी की वर्षभर की गतिविधियों को प्रदर्शित करने वाली अकादेमी प्रदर्शनी 2020 से हुआ, जिसका उद्घाटन साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने किया। प्रदर्शनी के उद्घाटन से पूर्व साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने पिछले वर्ष साहित्य अकादेमी द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी के कारण आई रुकावटों के बावजूद अकादेमी द्वारा पिछले वर्ष 540 आभासी कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिन्हें यूट्यूब पर लगभग दो लाख, फेसबुक पर सात लाख दस हजार एवं ट्वीटर पर सत्रह लाख साहित्य प्रेमियों ने देखा। इस बीच 235 पुस्तकों का भी प्रकाशन किया गया।

प्रदर्शनी में साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित दस भारतीय कालजयी कृतियों के रूसी एवं चीनी अनुवाद, नेताजी सुभाष चंद्र बोस के पत्रों का अंग्रेजी, हिंदी एवं बांग्ला में प्रकाशन तथा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' योजना के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों और आयोजित कार्यक्रमों की सूचनाओं को भी प्रदर्शित किया गया है। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय कविता दिवस, अंतरराष्ट्रीय स्वदेशी भाषा दिवस, महात्मा गाँधी के 150वें जयंती वर्ष पर अकादेमी द्वारा आयोजित विशेष कार्यक्रमों की जानकारी भी प्रदर्शित की गई है। प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक, साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य लेखक एवं विद्वान भी उपस्थित रहे।

सायं 6.00 बजे प्रख्यात हिंदी कवि, आलोचक, साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान में महत्तर सदस्य विश्वनाथ प्रसाद ने प्रतिष्ठित संवत्सर व्याख्यान प्रस्तुत किया। 'कविता और सर्जनात्मक साहित्य का स्व भाव' शीर्षक से दिए गए अपने व्याख्यान में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि भाषा अपने आप में मनुष्य की सर्जनात्मक चेतना का सबसे बड़ा चमत्कार है, इसीलिए कवि रचनाकार के साथ तो भाषा का संबंध जल और वीचि जैसा है। अर्थवान शब्द देने की क्षमता के अतिरिक्त लेखक के पास दूसरी कोई पूँजी नहीं होती। साहित्योत्सव के दूसरे दिन आज सायं 5.00 बजे कमानी सभागार में 'साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 अर्पण' समारोह होगा, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कथाकार चित्रा मुद्गल करेंगी।

सर्जनात्मक चेतना का सबसे बड़ा चमत्कार है भाषा : विश्वनाथ

नई दिल्ली (एसएनबी)। भाषा अपने आप में मनुष्य की सर्जनात्मक चेतना का सबसे बड़ा चमत्कार है, इसीलिए कवि रचनाकार के साथ तो भाषा का संबंध जल और वीचि जैसा है। अर्थवान शब्द देने की क्षमता के अतिरिक्त लेखक के पास दूसरी कोई पूंजी नहीं होती। यह बात साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान में महत्तर सदस्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने आज अकादमी की ओर से आयोजित साहित्योत्सव के शुभारंभ अवसर पर कही।

■ तीन दिवसीय साहित्योत्सव शुरू

साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने प्रसाद का स्वागत शॉल और पुस्तकें भेंट करके किया और कहा कि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी केवल हिंदी ही नहीं बल्कि आधुनिक भारतीय भाषाओं के बड़े कवि हैं। उन्होंने कहा कि मैंने उनके अध्यक्षीय कार्यकाल में पाँच वर्ष उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए उनकी बहुमुखी प्रतिभा को बहुत अच्छे से जाना समझा है। इससे पहले पूर्व साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सवंत्सर व्याख्यान के बारे में बताते हुए कहा कि यह अकादेमी की प्रतिष्ठित व्याख्यान शृंखला की 35वीं कड़ी है। इस व्याख्यान को देश के प्रमुख विद्वान प्रस्तुत करते रहे है।

साहित्य अकादेमी : साहित्योत्सव के दूसरे दिन अनुवाद पुरस्कार दिए गए

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 13 मार्च।

साहित्य अकादेमी की ओर से आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव 2021 के दूसरे दिन का मुख्य आकर्षण साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह रहा। यह कार्यक्रम कमानी सभागार में संपन्न हुआ।

साहित्य अकादेमी के सचिव के श्रीनिवास राव ने कहा कि अनुवाद ही ज्ञान की कुंजी है। समारोह की मुख्य अतिथि हिंदी कथा लेखिका चित्रा मुद्गल थीं। उन्होंने कहा कि अनुवादक एक सीमा तक स्वयं लेखक होता है। अच्छे अनुवादक के लिए परकाया प्रवेश का हुनर होना बहुत जरूरी है। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि हमारी बहुआयामी संस्कृति की एकता का आधार अनुवाद ही है।

सभी पुरस्कृत अनुवादकों को पुरस्कार के रूप में 50000 रुपए की राशि और उत्कीर्ण ताम्र फलक साहित्य कंबार की ओर से प्रदान किए गए। समापन वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि अनुवादक साहित्य के सबसे बड़े मिशनरी हैं। वे लेखकों द्वारा रचे मौन को भी पढ़कर उसको सार्थक अभिव्यक्ति देते हैं।

'अनुवादक स्वयं एक सीमा तक लेखक होता है'

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

नई दिल्ली।

साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित 'साहित्योत्सव 2021' के दूसरे दिन अकादमी अनुवाद पुरस्कार 2019 वितरण समारोह का आयोजन कमानी सभागार में किया गया।

इस मौके पर प्रख्यात हिंदी कथा लेखिका चित्रा मुल ने अपने भाषण में कहा कि अनुवादक एक सीमा तक स्वयं लेखक होता है। अच्छे अनुवादक के लिए परकाया प्रवेश का हुनर होना बहुत जरूरी है। साहित्य का अनुवाद अतिरिक्त सतर्कता की मांग करता है और इसके लिए मनोवैज्ञानिक विवेक की भी आवश्यकता है, क्योंकि इसके होने पर ही कोई अनुवादक रचना के मर्म तक पहुंच सकता है। सभी पुरस्कृत अनुवादकों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि आने वाले समय में अनुवादकों की विशेष भूमिका रहेगी। इससे पहले साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि हमारी बहुआयामी संस्कृति की एकता का आधार अनुवाद ही है।

साहित्य अकादमी के 'साहित्योत्सव' का दूसरा दिन

साहित्य का अनुवाद अतिरिक्त सतर्कता कीं मांग करता है

पूरे भारतीय महाद्वीप में जो सांस्कृतिक एकता हम देखते हैं वह विभिन्न भाषाओं और उनसे हुए अनुवादों के चलते ही है। हमारी कई प्राचीन पौराणिक कथाओं ने अनुवाद के जरिए ही एक पहचान पाई है। कार्यक्रम के अंत में समापन वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि अनुवादक साहित्य के सबसे बड़े मिशनरी हैं। वे लेखकों द्वारा रचे मौन को भी पढ़कर उसको सार्थक अभिव्यक्ति देते हैं।

समारोह के आरंभ में, साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए अनुवाद की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अनुवाद ही ज्ञान की कुंजी है।

अनुवादक स्वयं एक सीमा तक लेखक होता है: मुद्गल

नई दिल्ली | प्रमुख संवाददाता

अनुवादक एक सीमा तक स्वयं लेखक होता है। अच्छे अनुवादक के लिए परकाया प्रवेश का हुनर होना ज़रूरी है। उक्त बातें साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित किए जा रहे 'साहित्योत्सव 2021' के दूसरे दिन कमानी सभागार में साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह में प्रख्यात हिंदी कथा लेखिका चित्रा मुद्गल ने कही।

मुद्गल कहा कि साहित्य का अनुवाद अतिरिक्त सतर्कता की मांग करता है और इसके लिए मनोवैज्ञानिक विवेक की भी आवश्यकता है क्योंकि इसके होने पर ही अनुवादक रचना के मर्म तक पहुंच सकता है। सभी पुरस्कृत अनुवादकों को बधाई देते हुए कहा कि आने वाले समय में अनुवादकों की विशेष भूमिका रहेगी। वहीं, पुरस्कृत अनुवादकों को पुरस्कार के रूप में 50,000 रुपये की राशि और उत्कीर्ण ताम्र फलक साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान किए गए।

अनुवाद के जरिए पहचान

साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि हमारी बहुआयामी संस्कृति की एकता का आधार अनुवाद ही है। भारतीय महाद्वीप में जो सांस्कृतिक एकता हम देखते हैं वह विभिन्न भाषाओं के चलते ही है। हमारी कई प्राचीन पौराणिक कथाओं ने अनुवाद के जरिए ही एक पहचान पाई है।

अनामिका और वीरप्पा मोइली को मिलेगा साहित्य अकादमी पुरस्कार

नई दिल्ली। साहित्य अकादमी ने हिंदी में कविता संग्रह के लिए अनामिका और कन्नड़ में महाकाव्य लिखने के लिए कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एम वीरप्पा मोइली को वर्ष 2020 का प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार देने की शुक्रवार को घोषणा की। साहित्य अकादमी के सचिव के श्रीनिवास राव ने एक विज्ञप्ति में बताया कि अकादमी ने 20 भाषाओं के लिए अपने वार्षिक साहित्य अकादमी पुरस्कारों की घोषणा की है। अकादमी ने पुरस्कार देने के लिए सात कविता-संग्रह, चार उपन्यास, पांच कहानी-संग्रह, दो नाटक, एक संस्मरण और एक महाकाव्य का चयन किया है।